International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 1, Jan- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

बाराँ जिले के संदर्भ में ग्रामों का प्रतिदर्श विधि पर आधारित अध्ययन

शोधार्थी
ललित मीणा
कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

निर्देशक
डॉ. एम.जेड. ए. खान
सहायक आचार्य, भूगोल विभाग

भौगोलिक पृष्ठभूमि –

कोटा जिला भारतीय राज्य राजस्थान का संभागीय मुख्यालय है। हाड़ौती मुहल्ला कोटा प्रमंडल के अंतर्गत आता है। हाडौती अरावली रेंज और मालवा पठार के बीच का क्षेत्र है। हाड़ौती अंचल में वर्तमान में बूंदी, कोटा, बारां व झालावाड़ जिले शामिल हैं।

बारां, जिला मुख्यालय बारां शहर के साथ, पहले कोटा जिले का हिस्सा था और यहां तक कि तत्कालीन कोटा राज्य का भी। इसे 14वीं–15वीं सदी में सोलंकी राजपूतों ने बसाया था। नाम बारह लोगों के निपटान से लिया गया हो सकता है। एक मान्यता यह भी है कि एक बार इस भूमि पर बारह झीलें थीं, और उनके ऊपर पुलों द्वारा शहर का निर्माण किया गया था। वराह अवतार, भगवान विष्णु के दशावतारों में से एक, गुप्त काल के दौरान उनकी प्रतिष्ठा के चरम पर था। उनके समय में पूरे भारत में वराह अवतार की कई मूर्तियों की स्थापना कीगई थी। गुप्तों, प्रतिहारों के शक्तिशाली उत्तराधिकारियों के अधीन विष्णु की पूजा फिर से अपने चरम पर पहुंच गई। इस अवधि के दौरान, पूरे उत्तर भारत में सूअर की मूर्तियों की स्थापना की गई। बरन नगर से बड़ी संख्या में सूअर की मूर्तियाँ भी मिली हैं। इसलिए, यह अनुमान लगाया जाता है कि यह स्थान पहले वराह नगरी के नाम से जाना जाता था, जो बाद में बरन के नाम से जाना जाने लगा। अतः बरन शब्द वराह या वराह का अपभ्रंश है। वर्तमान समय के अधिकांश बारा जिले को पहले कोटा राज्य और टोंक राज्य के बीच विभाजित किया गया था, जो 1948 में राजस्थान संघ में विलय हो गया और 1949 में संयुक्त राजस्थान का हिस्सा बन गया, हालांकि इसका अधिकांश हिस्सा कोटा राज्य में रहा और छाबड़ा टोंक राज्य के अधीन था। वर्तमान म बारां राजस्थान का एक जिला है जिसकी स्थापना 10 अप्रैल 1991 को हुई थी।

अवस्थिति एवं विस्तार–

बारां जिला राजस्थान के दक्षिण पूर्वी भाग में $24^{o}24'$ से $25^{o}26'$ उत्तरी अक्षांश तथा $76^{o}12'$ से $72^{o}26'$ पूर्वी देशांतर पर स्थित है। जिले की सीमा पूर्व, दक्षिण, दक्षिण–पूर्व और उत्तर में मध्य प्रदेश, उत्तर–पश्चिम में कोटा जिले और दक्षिण–पश्चिम में झालावाड़ जिले से लगती है। बारां जिले का विस्तार

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 1, Jan- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

उत्तर से दक्षिण तक लगभग 110 किलोमीटर है। तथा पश्चिम से पूर्व की ओर विस्तार लगभग 120 किमी. है कालीसिंह नदी बारां को कोटा जिले से अलग करती है।

क्षेत्रफल एवं जनसंख्या –

बारां जिले का कुल क्षेत्रफल 6992 वर्ग किमी है। (शहरी 82.87 वर्ग कि.मी., ग्रामीण 6909.22 वर्ग कि.मी.)। जिले में गांवों की संख्या 1218 है, जिसमें 11 नव घोषित गांव, 215 ग्राम पंचायत और 4 नगरपालिकाएं शामिल ह। दो नगर पालिकाएँख एक (बारां, अंता) और दो (छाबड़ा, मंगरुल) से संबंधित हैं। सात पंचायत समितियां और चार विधानसभा क्षेत्र हैं।

जनसंख्या की दशकीय वृद्धि दर (2001–2011) 19.82 प्रतिशत रही है। कुल जनसंख्या 2011 के अनुसार 1223921 जिसमें पुरुष 635495 व स्त्रियां 588426 हैं। जिले का लिंगानुपात 926 है। जनसंख्या का घनत्व 175.04 प्रति वर्ग किमी. है। जिले की साक्षरता दर 67.38प्रतिशत है जिसमें पुरुष साक्षरता 81.23 व महिला साक्षरता 52.48 प्रतिशत है।

प्राकृतिक विभाजन–

यह क्षेत्र मध्यप्रदेश के मालवा प्लेटों का पठारी भाग है। निम्न एवं उच्च भूमियों का मैदानी क्षेत्र है। सामान्यतया इसकाढलान उत्तर की ओर है जो कि नदियों के बहाव या नहरों की प्रणाली को उत्तर दिशा की ओर प्रेरित करता है। औसत उच्चावच के अलावा इसका अधिकांश भाग मैदानी है जो कि समुद्रतल से 250 मीटर है। मुकुन्दरा पहाड़ी क्षेत्र और पठारी भाग उत्तर पश्चिम से दक्षिण–पूर्व की ओर स्थित है। इस क्षेत्र की समुद्रतल से ऊँचाई 492 मीटर है।

पहाड़ियाँ

इस क्षेत्र की पहाड़ियाँ सामान्यतः विंध्य पर्वत श्रृंखला से सम्बन्धित हैं। पहाड़ी श्रृंखला की एक छोटी पंक्ति लघु वृत्ताकृति में मध्यप्रदेश से छोपाबड़ौद तहसील के निम्न मध्य भाग में प्रवेश करती है। ये बारां में दक्षिण की ओर तथा इसके उत्तर–पूर्व कोण को झालावाड़ के पहाड़ी क्षेत्र से जोड़ते हुए दर्रा नाल की तरफ जाते हुए चम्बल तक जाती हैं। ये पहाड़ियाँ छबड़ा और अटरू क्षेत्र में होकर भी गुजरती है। टोडो रामपुरा व रामगढ में इसकी ऊँचाई 463 मीटर है। शाहाबाद तहसील के मामोनी में इस प्रकार की पहाड़ी की ऊँचाई 546 मीटर है। यह जिले की सर्वाधिक ऊँची पहाड़ी चोटी है। शाहाबाद भू–भाग अरावली की पहाड़ियों से आच्छादित है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 1, Jan- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

नदियां एवं जल स्त्रोत –

यह जिला चम्बल की सहायक नदियों से युक्त है जिसमें कालीसिंध, पार्वती, कुनु, परवन नदियाँ हैं। कालीसिंध चम्बल की सहायक नदीहै जो परवन से जुड़ने पर उत्तर की ओर मांगरोल तहसील की सीमाबनाते हुए 40 किमी. दूर बहती है। राजगढ़ से ढीबरी होकर कोटा जिलेके पीपल्दा में चम्बल में मिल जाती ह। इसके प्रवाह क्षेत्र में पलायथा,नौनेरा, कोटड़ा, बड़ौद, पाटून्दा आते हैं। पार्वती चम्बल की सहायकनदी है जिसका उद्गम विंध्य की पहाड़ियों से होता है। यह बारां जिलेमें दक्षिण की ओर से कड़ैयाहाट गांव से प्रवेश करती है और मध्यप्रदेशकी सीमा निर्माण करते हुए जिले के मध्य भागों से होकर गुजरती है।'परवन' भी विंध्य पहाड़ियों से निकलती है। बारां जिले के हरनावदाशाहजी से राजस्थान में प्रवेश करती है और बारां जिले की अटरूतहसील के मध्य भागों से गुजरते हुए रामगढ़ के निकट कालीसिंध मेंमिलती है। 'कुनु' शाहाबाद तहसील म दक्षिण की ओर से मध्यप्रदेश सेराजस्थान में आती है। लगभग 9 किमी. शाहाबाद तहसील में बहकरफिर से मध्यप्रदेश में प्रवेश करती है।'अंधेरी' नदी छीपाबड़ौद तहसील में मध्यप्रदेश से प्रवेश करती हैऔर अटरू से लगभग 6 किलोमीटर दूर पूर्व में पार्वती नदी से मिलतीहै।

'बाणगंगा' नदी बारां के दक्षिण में स्थित बामला से निकलती हैऔर मिथोड के निकट पार्वती में मिल जाती है। अन्य छोटी नदियां हैल्हासी, सूकड़, घड़ावली, खण्डेला, केलवाड़ा, गारड़ी, बिलास, बरानी,कोरी, रेतली, कोल आदि।

भूगोल –

बारां जिले का अधिकांश भाग आग्नेयव बलुआ चट्टान, चूना पत्थर की श्रेणियों से निर्मित है। इसका कारणविंध्य पहाड़ियों का होना है। दक्षिणी पठार का प्रतिनिधित्व भी यहांमुख्य बैसाल्टिक चट्टानों द्वारा देखा जाता है जो कि परत दर परतजिले के दक्षिण व पूर्व भागों में स्थित है जिसके कारण निम्न भू रचनापरत दर परत इस क्षेत्र में पायी जाती है। विभिन्न परतों में बलुआ पत्थर की प्राप्ति यह बताती है कि समुद्रतल का उतार–चढ़ाव अपनेनियमों को तोड़ते हुए पीछे हटता है। विंध्य पहाड़ी की सीमाओं में यहस्थिति पायी जाती है।

भौगोलिक स्थिति

2900 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ यह इस क्षेत्र का पूर्वी भाग है।यह हाड़ौती के पठार का उच्चावृति क्षेत्र है जिसे "शाहाबाद उच्च क्षेत्र"कहा जाता है। यह औसतन समुद्रतल से 300 मीटर ऊँचा है किन्तुइसका

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 1, Jan- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

पश्चिमी भाग 50 मीटर ही समुद्र तल से ऊंचा है। सर्वाधिकउच्च क्षेत्र कस्बाथाना के पास 456 मीटर है। इस क्षेत्र में एक विशिष्टभू आकृति रामगढ़ ग्राम के पास घोड़े की नाल की आकृति की पर्वतश्रेणी है जो समतल क्षेत्र में एकाएक बनी हुई है।

1. कुल क्षेत्रफल –146897 हैक्टेयर
2. वन –71497
3. पहाड़ियाँ– 1077 हैक्टेयर
4. ऊसर व अकृषि योग्य –10378 हैक्टेयर
5. चारागाह –7107 हैक्टेयर
6. सरकारी उपवन –0 हैक्टेयर
7. खातेदारी उपवन –30 हैक्टेयर
8. सरकारी पड़त –7432 हैक्टेयर
9. खातेदारी पड़त –7112 हैक्टेयर
10. सिंचित –28732 हैक्टेयर
11. असिंचित –13562 हैक्टेयर
12. कुल ग्रामों की संख्या –236 आबाद – 179, गैर आबाद – 57
13. कुल पटवार मण्डल– 33, कार्यरत पटवारी –13
14. भू–अभिलेख निरीक्षक वृत्त 4, कार्यरत भू–अ. निरी.–1
15. पुलिस थाने – 3 (शाहाबाद, केलवाड़ा, कस्बाथाना)
16. नगरपालिका –0
17. प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द – 4 ,द कस्बाथाना, शाहाबाद, समरानियां, केलवाड़ा
18. पशु चिकित्सालय –2 शाहाबाद, केलवाड़ा
19. सीनियर हायर सैकेण्डरी स्कूल – 4 कस्बाथाना, शाहाबाद, समरानियां, केलवाड़ा
20. पंचायत समिति – 1 शाहाबाद
21. कुल जनसंख्या –2011 –142315
22. कुल पशुधन –2007 –89691
23. सिंचाई साधन –कुऐं, ट्यूबवेल, तालाब, नहर

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 1, Jan- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

24. कुऐं –2582

25. तालाब –13

26. सिंचाई परियोजना – 5 खटका प्रोजेक्ट, रातई परियोजना, रानीपुर, बगदा, सिरसीपुरा

खनिज सम्पदा :–

बारां जिले में सामान्य रूप से सीमित खनिजसम्पदा है। चूना पत्थर, सिलिका, लेटेराइट पत्थर, गोमेद/अकीक,बॉक्साइट आदि पाये जाते हैं।

बारां जिले में भूमि उपयोग

बारां जिला भारत में राजस्थान राज्य के दक्षिणी भाग में स्थितहै। जिले का कुल क्षेत्रफल 6,992 वर्ग किलोमीटर है, और इसकीआबादी लगभग 1.2 मिलियन है। बारां जिले में रहने वाले लोगों कामुख्य व्यवसाय कृषि है, और यह जिले की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्णयागदान देता है।

बारां जिले में भूमि उपयोग मुख्य रूप से चार श्रेणियों में बांटा गया है– कृषि भूमि, वन भूमि, बंजर भूमि और अन्य भूमि। कृषि भूमि जिलेमें सबसे प्रमुख भूमि उपयाग है, जो कुल भूमि क्षेत्र के 60 प्रति"ात से अधिक केलिए जिम्मेदार है। जिले में उगाइ जाने वाली प्रमुख फसलें गेहूं, चना,मक्का और सोयाबीन हैं। जिले में बड़ी संख्या में फलों के बाग भी हैं,जिनमें मुख्य रूप से आम, अमरूद और साइटंस हैं।

वन भूमि जिले के एक महत्वपूर्ण हिस्से को कवर करती है, कुल भूमि क्षेत्र के 25 प्रति"ात से अधिक के लिए लेखांकन। जिले में एक समृद्धवन आवरण है, जो बाघों, तेंदुओं और हिरणों सहित विभिन्न प्रकार कीवनस्पतियों और जीवों का घर है। वन लकड़ी, जलाऊ लकड़ी औरअन्य वन उत्पादों का एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं, जो स्थानीय अर्थव्यवस्थामें योगदान करते हैं।

बंजर भूमि, जिसमें बंजर भूमि और चट्टानी इलाके शामिल हैं, कुल भूमि क्षेत्र का लगभग 10प्रति"ात है। यह भूमि खेती या किसी अन्य उत्पादकउपयोग के लिए उपयुक्त नहीं है और यह अप्रयुक्त रहती है।जिले में अन्य भूमि उपयोगों में आवासीय क्षेत्र, सड़कें और औद्योगिकक्षेत्र शामिल हैं। जिले में कुछ छोटे पैमाने के उद्योग हैं, जो मुख्य रूप से कृषि–प्रसंस्करण पर आधारित हैं, जो स्थानीय आबादी को रोजगारके अवसर प्रदान करते हैं।

बारां जिले में भूमि उपयोग में कृषि और वनों का प्रभुत्व है, जोस्थानीय आबादी के लिए आजीविका का मुख्य स्रोत हैं। रणनीतिकस्थिति और संसाधनों की उपलब्धता को देखते हुए जिले में औद्योगिकविकास की भी महत्वपूर्ण संभावनाएं हैं।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 1, Jan- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

बारां जिले में फसल प्रारूप

राजस्थान के बारां जिले में अपनी विविध कृषि–जलवायु परिस्थितियोंके कारण विविध फसल पैटर्न है। जिले में उगाई जाने वाली मुख्यफसलें गेहूं, चना, मक्का, सोयाबीन और सरसों हैं। इनके अलावा, जिलेमें आम, अमरूद और साइटंस जैसे कई प्रकार के फल भी उगाए जातेहैं, जो मुख्य रूप से बागों में उगाए जाते हैं।

गेहूं बारां जिले में उगाई जाने वाली सबसे महत्वपूर्ण फसल है औरस्थानीय आबादी के लिए प्रमुख खाद्य फसल है। जिले में गेहूं की खेतीकी उच्च संभावना है, और यह सिंचित क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर उगायाजाता है। गेहूं की फसल आमतौर पर नवंबर–दिसंबर में बोई जाती हैऔर अप्रैल–मई में काटी जाती है।

चना जिले में उगाई जाने वाली एक अन्य महत्वपूर्ण फसल है,और यह मुख्य रूप से वर्षा आधारित क्षेत्रों में उगाई जाती है। फसलआमतौर पर सितंबर–अक्टूबर में बोई जाती है और फरवरी–मार्च मेंकाटी जाती है। मक्का भी जिले में उगाया जाता है और मुख्य रूप सेखरीफ फसल के रूप में खेती की जाती है। इसे जून–जुलाई में बोयाजाता है और अक्टूबर–नवंबर में काटा जाता है।

सोयाबीन बारां जिले में उगाई जाने वाली एक महत्वपूर्ण तिलहनीफसल है और मुख्य रूप से सिंचित क्षेत्रों में इसकी खेती की जातीहै। फसल जून–जुलाई में बोई जाती है और अक्टूबर–नवंबर में काटीजाती है। सरसों जिले में उगाई जाने वाली एक अन्य महत्वपूर्ण

तिलहनी फसल है, जिसकी खेती मुख्य रूप से वर्षा आधारित क्षेत्रों मेंकी जाती है। फसल नवंबर–दिसंबर में बोई जाती है और मार्च–अप्रैलमें काटी जाती है।

इन प्रमुख फसलों के अलावा, जिले में कई प्रकार की सब्जियां भीउगाई जाती हैं, जैसे कि टमाटर, भिंडी, और बैंगन, और फल, जैसे आम, अमरूद और साइटंस। अनुकूल कृषि–जलवायु परिस्थितियों कोदेखते हुए जिले में बागवानी के लिए महत्वपूर्ण क्षमता है।

बारां जिले में फसल पैटर्न में गेहूं, चना, मक्का, सोयाबीन औरसरसों का प्रभुत्व है, जो जिले में उगाई जाने वाली प्रमुख फसलेंहैं। हालांकि, बागवानी और अन्य उच्च मूल्य वाली फसलों की ओरविविधीकरण की भी महत्वपूर्ण संभावना है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 1, Jan- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- ✓ सरला अग्रवाल : वास्तुदर्शन, कामेश्वर प्रकाशन, बीकानेर, 1996
- ✓ सुखवीर सिंह गहलोत : राजस्थान का इतिहास (तिथिक्रम से), राजस्थान साहित्य मंदिर, जोधपुर, 1980
- ✓ बी.एल. पानगडिया : राजस्थान का इतिहास, प्राचीनकाल से 1956, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली
- ✓ एच.बी. पॉल : टेम्पल ऑफ राजस्थान, अलवर, जयपुर प्रकाशन, 1969
- ✓ राजस्थान का इतिहास, किरण पब्लिकेशन्स, अजमेर 1999